Result Mitra

# रिजल्ट मित्र स्पेशल

# Hand Written

# करंट अफेयर्स नोट्स

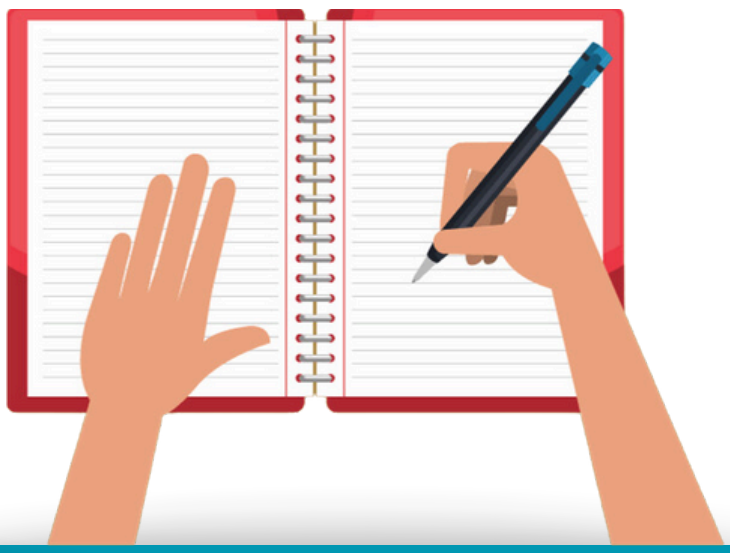

# राजेन्द्र नाथ लाहिड़ी

## चर्चा में क्यों

राजेन्द्र नाथ लाहिड़ी को काकोरी कांड में भूमिका के कारण 17 दिसंबर 1927 को गोंडा जेल में फांसी दी गई। उनकी शहादत ब्रिटिश हुकूमत के खिलाफ क्रांतिकारी संघर्ष की मिसाल बनी लेकिन स्मारक विकास आज भी उपेक्षित है।

## प्रमुख बिन्दु

राजेन्द्र नाथ लाहिड़ी, रामप्रसाद बिस्मिल, अशफाकउल्लाह खाँ और रोशन सिंह ने 9 अगस्त 1925 को काकोरी ट्रेन डकैती के तहत अंग्रेजों का खजाना लूटा था।

इस ऑपरेशन से अंग्रेजों का सिंहासन हिल गया। और 4601 की लूट पर अंग्रेज सरकार ने जाँच पर 10 लाख खर्ची किए।

राजेन्द्र लाहिड़ी का जन्म 23 जून 1901 को बंगाल प्रेसीडेंसी (वर्तमान- बांग्लादेश में) पबना जिले के मोहनपुर गांव में हुआ था।

उन्होंने दक्षिणेश्वर बम विस्फोट में भाग लिया और फरार हो गए। बनारस में अपने दोस्तों के साथ वे हिन्दुस्तान रिपब्लिकन एसोसिएशन में शामिल हो गए।

- 9 अगस्त 1925 को उन्होंने लखनऊ के पास काकोरी के बीच एक ट्रेन डकैती में भाग लिया। जिसका उद्देश्य ब्रिटिश सरकार की क्रांतिकारी गतिविधियों के लिए धन लूटना था। इसे काकोरी षड़यंत्र के नाम से जाना जाता है। (वर्तमान में काकोरी ट्रेन एक्शन)
- ट्रेन में एक यात्री की दुर्घटनावश गोली लगने से मौत हो गई। जिससे यह हत्या का मामला बन गया। इस मामले में 40 लोगों को गिरफ्तार किया गया।
- राजेन्द्र लाहिड़ी को दक्षिणेश्वर बम विस्फोट के सिलसिले में गिरफ्तार किया गया। और 10 साल की कठोर सजा सुनाई गई।
- लंबी सुनवाई के बाद उन पर मुकदमा चलाया गया। और फांसी की सजा सुनाई गई। इनके साथ अन्य तीन दोषियों रामप्रसाद बिस्मिल, अशफाकउल्ला खाँ और ठाकुर रोशन सिंह को फांसी की सजा सुनाई गई।
- निर्धारित तिथि से 2 दिन पहले 17 दिसंबर को गोंडा (उत्तरप्रदेश) में फांसी दे दी गई। उस समय उनकी उम्र महज 26 साल थी।

@resultmitra www.resultmitra.com

# राजेन्द्रनाथ लाहिड़ी

राजेन्द्रनाथ लाहिड़ी: एक महान क्रांतिकारी का जीवन परिचय
राजेन्द्रनाथ लाहिड़ी का जन्म 29 जून 1901 को बंगाल (वर्तमान बांग्लादेश) के पबना जिले के मड़याँ (मोहनपुर) गाँव में हुआ था। उनके पिता का नाम क्षिति मोहन लाहिड़ी और माता का नाम बसंत कुमारी था। जब उनका जन्म हुआ, उनके पिता और बड़े भाई अनुशीलन समिति की गतिविधियों में भागीदारी के आरोप में जेल में कैद थे। इसी माहौल में उनके अंदर देशभक्ति की भावना बचपन से ही जागृत हो गई।
महज नौ साल की उम्र में वे अपने मामा के घर वाराणसी चले गए, जहाँ उनकी पढ़ाई-लिखाई हुई। काशी की धार्मिक नगरी में शिक्षा प्राप्त करते हुए वे शचींद्रनाथ सान्याल जैसे प्रमुख क्रांतिकारियों के संपर्क में आए। शचीन दा ने उनकी प्रतिभा और साहस को पहचानते हुए उन्हें बनारस से प्रकाशित "बंग वाणी" पत्रिका के संपादन का कार्य सौंपा। इसके साथ ही उन्हें अनुशीलन समिति की वाराणसी शाखा के सशस्त्र विभाग की जिम्मेदारी भी दी गई।

## क्रांतिकारी जीवन और काकोरी कांड

राजेन्द्रनाथ काशी हिंदू विश्वविद्यालय में इतिहास विषय से एम.ए. के पहले वर्ष के छात्र थे, जब काकोरी कांड हुआ। उनकी क्रांतिकारी कुशलता के कारण उन्हें हिंदुस्तान रिपब्लिकन एसोसिएशन (HRA) की गुप्त बैठकों में भाग लेने का अवसर मिला। काकोरी कांड में उनकी सक्रिय भूमिका के चलते उन्हें गिरफ्तार कर लिया गया।

## पठन-पाठन के प्रति रुचि

राजेन्द्रनाथ लाहिड़ी अध्ययन प्रेमी थे। बंगाली साहित्य और लेखन में उनकी विशेष रुचि थी। अपने भाइयों के साथ मिलकर उन्होंने अपनी मां की स्मृति में "बसंतकुमारी पुस्तकालय" की स्थापना की। काशी हिंदू विश्वविद्यालय में वे बंगाली साहित्य परिषद के मंत्री थे। उनके लेख "बंग वाणी" और "शंख" जैसे पत्रों में प्रकाशित होते थे। उन्होंने "अग्रदूत" नामक हस्तलिखित पत्र की शुरुआत की, जो बनारस के क्रांतिकारी विचारों को स्वर देता था।

## बलिदान

राजेन्द्रनाथ लाहिड़ी को काकोरी कांड में शामिल होने के कारण 17 दिसंबर 1927 को गोंडा जिला जेल में फांसी दी गई। यह फांसी उनके साथियों से दो दिन पहले ही दे दी गई। उनका जीवन देशभक्ति, दृढ़ता और स्वतंत्रता के प्रति असीम समर्पण का प्रतीक है।

उनकी इस अद्वितीय वीरता और बलिदान को भारतीय स्वतंत्रता संग्राम में हमेशा याद किया जाएगा।